डिजिटल युग में हिंदी भाषा की चुनौतियाँ और संभावनाएँ

स्नेहा एम. कोंडगुळि*

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.21438899

ABSTRACT

वर्तमान समय में डिजिटल क्रांति ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र की गहराई को प्रभावित किया है। भाषा, जो मानव संचार का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है, वह इससे अछूती नहीं रही है। डिजिटल युग ने संचार और भाषा के स्वरूप को व्यापक रूप से परिवर्तित किया है। हिंदी, जो विश्व के प्रमुख भाषाई समुद्रों में से एक है, और भारत की प्रमुख भाषाओं में से एक है, इस परिवर्तन से गहराई से प्रभावित हुई है। डिजिटल युग में हिंदी कई अवसरों और समस्याओं का सामना कर रही है। एक ओर इंटरनेट, सोशल मीडिया, डिजिटल प्लेटफॉर्म (डिजिटल मंच) और प्रौद्योगिकी के विस्तार ने हिंदी के प्रचार-प्रसार को नई दिशा दी है, वहीं दूसरी ओर भाषाई दुनिया, तकनीकी बाधाएं और अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव जैसी समस्याएं भी सामने हैं।

भाषा सिर्फ संवाद का माध्यम नहीं, वह एक समाज की पहचान है, सभ्यता व संस्कृति की पहचान है, ज्ञान का आदर और भावों का जीवंत चित्रण है। प्रस्तुत शोध-पत्र "डिजिटल युग में हिंदी भाषा की चुनौतियाँ और संभावनाएँ" में हिंदी भाषा की वर्तमान स्थिति, उसके कथानक और चरित्र का विश्लेषण किया गया है। यह सुझाव देने का प्रयास किया गया है कि डिजिटल युग में हिंदी भाषा को कितना मजबूत और समृद्ध बनाया जा सकता है।

KEYWORDS: डिजिटल युग, हिंदी भाषा, तकनीकी विकास, सोशल मीडिया, भाषा चुनौतियाँ, भाषा की संभावनाएँ.

* **स्नेहा एम. कोंडगुळि,** अध्यापिका, हिंदी विभाग, के.एल.ई. संस्था, जे.टी. महाविद्यालय, गदग.

प्रस्तावना:

भाषा किसी भी समाज की सांस्कृतिक, सामाजिक और प्रतिष्ठित पहचान का प्रमुख आधार है। हिंदी भारत की प्रमुख भाषाओं में से एक है, जो न केवल देश में बल्कि विश्व स्तर पर भी व्यापक रूप से बोली और समझी जाती है। भारत जैसे बहुभाषी देश में हिंदी की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। आज हिंदी केवल साहित्य की भाषा नहीं, बल्कि तकनीकी, शिक्षा और व्यवसाय का भी प्रमुख माध्यम बन रही है।

21वीं सदी में डिजिटल क्रांति ने समाज के हर क्षेत्र में परिवर्तन लाया है, जिसमें सूचना और संचार तकनीक ने जीवन को बेहद सरल और गतिशील बना दिया है। डिजिटल मंच जैसे इंटरनेट, मोबाइल प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया आदि ने भाषा के स्वरूप और उपयोग को बदल दिया है। हिंदी भाषा भी इस परिवर्तन से प्रभावित हुई है। एक ओर अंग्रेजी का वैश्विक प्रसार हुआ है, वहीं दूसरी ओर हिंदी के स्वरूप में कई प्रकार के बदलाव आए हैं।

डिजिटल युग की अवधारणा (दृष्टिकोण)

डिजिटल युग का उदय उस समय से माना जाता है, जब सूचनाओं का आदान-प्रदान डिजिटल माध्यम से होने लगा। इसमें कंप्यूटर, इंटरनेट, तकनीकी उपकरणों और सोशल मीडिया का प्रमुख योगदान है। इंटरनेट के विस्तार और प्रौद्योगिकी की सुविधा ने हिंदी के प्रयोग को एक नई दिशा प्रदान की है। आज सोशल मीडिया जैसे प्लेटफार्म, फेसबुक और नेटफ्लिक्स पर हिंदी का प्रयोग हो रहा है। गूगल जैसे सर्च इंजनों ने हिंदी की महत्ता को बढ़ाया है।

- **तत्काल संदेश:** डिजिटल सुविधा से संदेशों को भेजना और प्राप्त करना अब मिनटों का काम है। परंपरागत रूप से केवल टेक्स्ट संदेशों तक ही सीमित न रहकर अब इसमें आवाज़ या वीडियो के माध्यम से भी संदेश उपलब्ध होते हैं।
- **विश्व संपर्क:** भौगोलिक सीमाओं से परे दुनिया भर के लोग एक-दूसरे से सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से जुड़ रहे हैं। परस्पर जुड़ाव या निर्भरता ही विश्व संपर्क या वैश्वीकरण है। इंटरनेट और डिजिटल माध्यम आदान-प्रदान की इस प्रक्रिया में सहायक बन रहे हैं।
- **बहुभाषी सामग्री का विस्तार:** भाषा संपर्क का माध्यम है लेकिन बहुभाषिकता की वजह से संपर्क करने में बाधा उत्पन्न होती है। लेकिन डिजिटल उपकरणों ने बहुभाषीय संपर्क प्रक्रिया को और सरल, तेज़ और व्यापक बना दिया है।

हिंदी भाषा का वर्तमान परिप्रेक्ष्य (परिदृश्य)

हिंदी विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। डिजिटल युग में सूचना और डिजिटल क्रांति ने मानव जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया है। हिंदी ने इस डिजिटल परिवेश में अपनी एक विशिष्ट पहचान

बनाई है। इंटरनेट पर हिंदी सामग्री की मात्रा लगातार बढ़ रही है। कभी यह माना जाता था कि कंप्यूटर और इंटरनेट केवल अंग्रेजी जानने वालों के लिए है, लेकिन आज यह धारणा पूरी तरह से बदल गई है।

गूगल, यूट्यूब, फेसबुक, ट्विटर जैसे प्लेटफॉर्म पर हिंदी का प्रयोग तेजी से बढ़ा है। डिजिटल युग ने हिंदी को वैश्विक मंच पर स्थापित करने और इसे आम जनमानस की तकनीकी भाषा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत में 'डिजिटल इंडिया अभियान' और इंटरनेट की पहुँच ने हिंदी के उपयोग को बढ़ावा दिया है। ग्रामीण इलाकों में भी हिंदी डिजिटल संचार का प्रमुख माध्यम बन रही है।

डिजिटल युग में हिंदी भाषा की चुनौतियाँ

हालाँकि डिजिटल युग में हिंदी के सामने कुछ चुनौतियाँ भी हैं, जैसे मानक वर्णक्रम का अभाव और 'हिंग्लिश' का प्रभाव। रोमन लिपि में हिंदी लिखने की प्रवृत्ति से देवनागरी लिपि पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। इसके बावजूद तकनीकी विकास ने हिंदी को समृद्ध बनाया है। यूनिकोड के आने से हिंदी फ़ॉन्ट की समस्या हल हो गई है और अब हिंदी सामग्री का डिजिटलीकरण तेजी से हो रहा है।

1. **अंग्रेजी भाषा का प्रभाव:** डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अंग्रेजी का वर्चस्व लंबे समय से बना हुआ है। अधिकांश तकनीकी शब्द अंग्रेजी में ही प्रयुक्त होते हैं, जिनमें हिंदी के गुण शामिल कर लिए जाते हैं।
2. **हिंग्लिश का प्रभाव:** सोशल मीडिया और युवाओं में हिंदी और अंग्रेजी के मिश्रण 'हिंग्लिश' (हिंदी + अंग्रेजी) का प्रयोग तेजी से बढ़ रहा है। इससे हिंदी की शुद्धता और मानक रूप प्रभावित हो रहा है, जो मानक हिंदी के अस्तित्व के लिए खतरा बन रहा है। उदाहरण: "मैं आज मीटिंग में व्यस्त हूं।" यह प्रवृत्ति हिंदी की वाक्य-संरचना और व्याकरण को प्रभावित कर रही है।
3. **तकनीकी शब्दावली व संसाधन:** उच्च शिक्षा, विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में हिंदी में सटीक शब्दों और गुणवत्तापूर्ण सामग्री की कमी है। हिंदी में गुणवत्तापूर्ण तकनीकी, वैज्ञानिक और अकादमिक सामग्री का अभाव है। हिंदी में उच्च गुणवत्ता वाले ट्यूटोरियल और टूल्स की कमी, वॉइस रिकग्निशन और मशीन डिक्शनरी की सीमाएँ तथा डेटा की कमी बड़ी चुनौती बन गई हैं। (यद्यपि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन ट्रांसलेशन और वॉयस रिकग्निशन जैसी तकनीकों ने हिंदी का उपयोग आसान बना दिया है और अब लोग हिंदी में टाइपिंग, वॉयस सर्च व अनुवाद कर सकते हैं।)
4. **प्रमाणिकता और फेक न्यूज:** डिजिटल प्लेटफार्मों पर कंटेंट की विश्वसनीयता, नकली खबरों (Fake News) का संकट, सामग्री की प्रमाणिकता का

अभाव और साहित्यिक चोरी (Plagiarism) एक बड़ी चुनौती है।

5. **डिजिटल विभाजन:** अभी भी एक बड़ा वर्ग उच्च गुणवत्ता वाली हिंदी डिजिटल साक्षरता से वंचित है। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिंदी के प्रयोग में एकरूपता नहीं है। शब्दों के अलग-अलग रूप देखने को मिलते हैं। सोशल मीडिया पर अटपटी और अमानक भाषा के प्रयोग से व्याकरण त्रुटियाँ बढ़ रही हैं।
6. **अनुवाद और लिप्यांतरण की समस्या:** हिंदी में उपलब्ध अधिकतर डिजिटल सामग्री अंग्रेजी से अनुवादित होती है, जिससे भाषा की स्वाभाविक शैली (Natural Flow) कम हो जाती है। रोमन लिपि की जगह देवनागरी लिपि में हिंदी लिखने के बजाय रोमन में टाइप करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है (जैसे: "Aap kaise hain?"), जिससे भाषा मूलतः प्रभावित होती है।

यह कहा जा सकता है कि डिजिटल युग हिंदी के लिए गौरवशाली साबित हुआ है। इस युग में हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है, जिससे यह केवल साहित्य की भाषा न रहकर आधुनिक युग की एक मजबूत और सशक्त संचार भाषा बन गई है। हिंदी को ज्ञान और रोजगार की भाषा के रूप में मजबूती से स्थापित करने की आवश्यकता है।

डिजिटल युग में हिंदी भाषा की संभावनाएँ

1. इंटरनेट ने हिंदी को वैश्विक मंच प्रदान किया है। हिंदी सीखने और उपयोग करने वालों की संख्या में बढ़ोतरी हो रही है।
2. यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम, ब्लॉग आदि प्लेटफॉर्म पर हिंदी सामग्री की प्रधानता बढ़ रही है।
3. ऑनलाइन शिक्षा मंच पर हिंदी में अध्ययन सामग्री उपलब्ध हो रही है, जिससे शिक्षा का प्रसार हो रहा है।
4. हिंदी समाचार पोर्टल और डिजिटल मीडिया तेजी से विकसित हो रहे हैं।
5. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और लैंग्वेज मॉडल के माध्यम से हिंदी में मशीनी अनुवाद और चैटबॉट जैसे टूल विकसित हो रहे हैं।

हिंदी भाषा के विकास के उपाय

शिक्षा सुधार में डिजिटल माध्यमों में हिंदी के समावेश से तकनीकी विकास का अवसर मिल रहा है। इसके अलावा, ई-कॉमर्स और डिजिटल मार्केटिंग में हिंदी का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। कंपनियाँ अपने उत्पादों और सेवाओं को हिंदी में प्रस्तुत कर रही हैं ताकि वे अधिक से अधिक लोगों तक पहुँच सकें।

सरकार को हिंदी को बढ़ावा देने के लिए नीतियाँ बनानी चाहिए और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर हिंदी सामग्री को प्रोत्साहन देना चाहिए। जन-जागरूकता लानी होगी कि शुद्ध हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दें और देवनागरी के

स्थान पर रोमन लिपि का उपयोग कम करने पर जोर दिया जाए।

निष्कर्ष

डिजिटल युग में हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है, बशर्ते हम तकनीकी नवाचार के साथ-साथ भाषा की गुणवत्ता और मानकीकरण पर भी ध्यान दें। हिंदी को ज्ञान और रोजगार की भाषा के रूप में मजबूती से स्थापित करने की आवश्यकता है। डिजिटल युग हिंदी भाषा के लिए एक अवसर और चुनौती दोनों है। यदि हम तकनीकी विकास के साथ हिंदी को बढ़ावा देते हैं और अपनी पहचान व मौलिकता को बनाए रखते हैं, तो विश्व स्तर पर हिंदी का और अधिक विस्तार हो सकता है। हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है, बस हमें इसके विकास के लिए समन्वित प्रयास करने होंगे।

संदर्भ सूची:

1. त्रिगुण, रामस्वरूप - हिंदी भाषा और उसका विकास
2. शर्मा, परमाणु - भाषा और समाज
3. सिंह, नामवर - हिंदी के विकास में मीडिया की भूमिका
4. गुप्ता, अजय कुमार - डिजिटल मीडिया और हिंदी
5. भारत सरकार - डिजिटल इंडिया अभियान रिपोर्ट
6. यूनेस्को – भाषा और डिजिटल संचार रिपोर्ट
7. इंटरनेट स्रोत: गूगल स्कॉलर, हिंदी विकिपीडिया, विभिन्न हिंदी समाचार पोर्टल